International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 4; June 2016; Page No. 74-78

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण

विभागाध्यक्ष (बी.एड), देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। विद्यालयों में पुनरावृत्ति का अर्थ बालक–बालिका का अनुतीर्ण होने या अन्य कारणों से एक कक्षा में एक वर्ष से अधिक अध्ययन करने से होता है। जिससे शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शिक्षा के सार्वभौमिकरण को दृष्टिगत् रखते हुए सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा तक सबकी पहुॅच तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की पहल की जा रही है जिससे बच्चों के भविष्य का ठोस आधार विकसित हो सके। परन्तु कई कारणों से जैसे माता–पिता की निरक्षरता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा समुचित व्यवस्थाओं का अभाव होने से आज भी बुनियादी शिक्षा में कक्षा पुनरावृत्ति जैसी समस्यायें व्याप्त है जिनके समाधान किये बिना गुणवत्तापरक बुनियादी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित करना संभव नहीं है।

मुख्य–शब्द: प्राथमिक विद्यालय, अध्ययनरत्, पुनरावृत्ति दर, तुलनात्मक अध्ययन, अपव्यय एंव अवरोधन

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के विकास की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। शिक्षा को शब्द संग्रह अथवा समूह की स्मृति में न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा से ही व्यक्ति सीखता है। शिक्षा बालक के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक, बौद्धिक एंव आन्तरिक ज्ञान को बाहर लाने में योगदान देने वाली एक किया है। जॉन लॉक ने मानवीय जीवन में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि, ''पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।'' जनतांत्रिक युग में शिक्षा उन्नति का साधन एंव आधार है तथा शिक्षा के कारण ही नागरिकों में जनतांत्रिक गुणों का विकास होता है तथा वह अपने अधिकार व कर्तव्यों को समझते है। किसी भी देश व समाज के विकास में प्राथमिक शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि यही बच्चों को आधार प्रदान करती है। जब तक प्राथमिक शिक्षा का समुचित विकास नही किया जायेगा तब तक देश व समाज के विकास की कल्पना व्यर्थ है। प्राथमिक शिक्षा में बच्चों को सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा का ज्ञान कराया जाता है, उन्हें सामान्य मानव व्यवहार में प्रशिक्षित किया जाता है, तथा उनमें देखने समझने की शक्ति विकसित की जाती है और उन्हें अध्ययन कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है। प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में संविधान के नीति निर्देशक सिद्धान्तों के अनुच्छेद 45 द्वारा प्रत्येक नागरिक को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार प्रदान किया गया है। इसमें स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि – ''सरकार प्रयास करेगी कि इस संविधान के लागू होने के दस वर्ष के भीतर सब बच्चों को 14 वर्ष की अवधि तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करायी जाय।'' परन्तु उस लक्ष्य को आज तक भी प्राप्त नहीं किया जा सका है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अनेक बाधाएं रही है जिनमें मुख्य रूप से सामाजिक पिछड़ापन, धनाभाव, बढ़ती हुई जनंसख्या, जागरूकता का अभाव, माता–पिता की निरक्षरता, संशाधनों का अभाव, बेरोजगारी तथा ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा की कमी जैसे कारण जिम्मेदार है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में ''सभी के लिए शिक्षा'' की पुनरावृत्ति की गयी थी। इसमें जाति, धर्म, वर्ग, क्षेत्र तथा गरीबी–अमीरी के भेदभाव के बिना सभी बच्चों को क्षमता और समानता के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया था तथा देश में संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का सघन मूल्यांकन पर जोर दिया गया था जिससे विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति एवं गुणवत्ता का आंकलन किया जा सकता है। प्रारम्भिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एक भीषण समस्या है। इस समस्या के प्रति 1929 में हर्टांग समिति ने ध्यान आकृष्ट किया था। समिति ने कहा कि यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों तथा बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई है पर इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा में प्रगति हो रही है आज भी कितने ही अभिभावक ऐसे हैं जो कठिन परिस्थितियों के शिकंजे में फंसे होने के कारण अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालयों से पृथक कर लेते हैं।

नयाल (1985) ने शिक्षा में पलायन की समस्या का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया कि हाईस्कूल स्तर पर पलायनवादी व्यवहार के लिए विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक कारक संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। हमारी अनाकर्षक शिक्षा व्यवस्था भी हाईस्कूल स्तर पर पलायन के लिए जिम्मेदार थी। प्रारम्भिक शिक्षा में कक्षा प्रोन्नत का अर्थ है विद्यार्थी कक्षा में निर्धारित आयु में नामांकित होकर निरन्तर कक्षा उत्तीर्ण करते हुए निर्धारित समय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर ले जिससे विद्यार्थी गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को कम किया जा सकता है।

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में प्रवाह आरेखण एक ज्वलन्त समस्या है। प्रवाह आरेखण के अन्तर्गत नामांकन, प्रवेश, कक्षा प्रोन्नत, कक्षा पुनरावृत्ति तथा कक्षा शालात्यागी जैसी समस्यायें आती हैं। ये समस्यायें प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को

प्रभावित कर रहे हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को विद्यालयों मे नामांकित कराकर उन्हे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं की जाती तथा प्राथमिक विद्यालयों में किन्हीं कारणों से बार–बार कक्षा पुनरावृत्ति एवं विद्यालय पलायन जैसी समस्याओ का निदान नहीं किया जायेगा तब तक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन होगा।

पूर्व अध्ययन समीक्षा – पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से रैकवार (2000), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), नयाल (1985), कोठारी कमीशन (1964–1966), डी0पी0ई0पी0 III (2006), गुप्ता (1983), तोमर (1991), मिश्र (1998) एवं वर्धा शिक्षा योजना (1937) ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

अध्ययन का उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया गया है:– जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना–शोध कार्य की मुख्य परिकल्पना निम्न है:– राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन – उतराखण्ड के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

उपकरण तथा तकनीकें – प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श समूहों के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर t मान की सहायता से मध्यमान अन्तर की सार्थकता का आंकलन किया गया है इसके अलावा 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का अध्ययन किया गया हें
't' परीक्षण के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

$$t = \frac{M1 - M2}{SED}$$

M_1= पहले न्यादर्श समूह का मध्यमान
M_2= दूसरे न्यादर्श समूह का मध्यमान
SED= मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

$$SED = \sqrt{PQ\left[\frac{1}{N1} + \frac{1}{N2}\right]}$$

$$P = \frac{N1P1 + N2P2}{N1 + P1}$$

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या – जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं मे कक्षा पुनरावृत्ति का लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु पुनरावृत्ति दर की तुलना एवं सार्थकता की जॉच t टेस्ट के द्वारा की गयी है।
तालिका संख्या–1 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक कुल अध्ययनरत् बच्चों तथा कक्षावार कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले बच्चों का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 621 बच्चों ने कक्षा पुनरावृत्ति की जिनका कुल प्रतिशत 5.25 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 431 बच्चे कक्षा 3 में 505 बच्चे, कक्षा 4 में 565 बच्चे तथा कक्षा 5 में 390 बच्चों ने कक्षा पुनरावृत्ति किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 3. 92, 4.88, 5.87 तथा 4.40 प्रतिशत था।

तालिका 01: कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले कुल बच्चों का विवरण

कक्षा	कुल बच्चे	पुनरावृत्ति करने वाले कुल बच्चे	पुनरावृत्ति दरः
1	11826	621	5.25
2	10960	431	3.92
3	10348	505	4.88
4	9629	565	5.87
5	8852	390	4.40

तालिका संख्या–2 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालकों का तथा कक्षावार कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले कुल बालकों का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 271 बालकों ने कक्षा पुनरावृत्ति की जिनका कुल प्रतिशत 4.85 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 207 बालक, कक्षा 3 में 259 बालक, कक्षा 4 में 248 बालक तथा कक्षा 5 में 170 बालकों ने कक्षा पुनरावृत्ति किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 3.97, 5.27, 5.45 तथा 4.04 प्रतिशत था।

तालिका 02: कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले कुल बालकों का विवरण

कक्षा	कुल बालक	पुनरावृत्ति करने वाले कुल बालक	पुनरावृत्ति दरः
1	5583	271	4.85
2	5209	207	3.97
3	4913	259	5.27
4	4552	248	5.45
5	4209	170	4.04

तालिका संख्या–3 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालिकाओं का तथा कक्षावार कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 350 बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति की जिनका कुल प्रतिशत 5.61 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 224 बालिकाऐं, कक्षा 3 में 246 बालिकाऐं, कक्षा 4 में 317 बालिकाऐं तथा कक्षा 5 में 220 बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 3.89, 4.53, 6.24 तथा 4.74 प्रतिशत था।

तालिका 03: कक्षा पुनरावृत्ति करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण

कक्षा	कुल बालिकायें	पुनरावृत्ति करने वाल कुल बालिकायें	पुनरावृत्ति दरः
1	6243	350	5.61
2	5751	224	3.89
3	5435	246	4.53
4	5077	317	6.24
5	4643	220	4.74

तालिका संख्या–04 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 1 में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.85 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 4. 85 प्रतिशत बालक तथा 5.61 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्शों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 04: पुनरावृत्ति दर–कक्षा–1

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का :	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	5583	4.85	5.25	94.75	0.41	1.85	सार्थक नहीं
बालिका	6243	5.61					

तालिका संख्या–5 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 2 में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0. 22 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 2 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 3.97 प्रतिशत बालक तथा 3.89 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 2 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 05: पुनरावृत्ति दर– कक्षा–2

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का :	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	5209	3.97	3.93	96.07	0.37	0.22	सार्थक नहीं
बालिका	5751	3.89					

तालिका संख्या–6 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 3 में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1. 76 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 5.27 प्रतिशत बालक तथा 4.53 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 06: पुनरावृत्ति दर– कक्षा–3

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का :	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4913	5.27	4.88	95.12	0.42	1.76	सार्थक नहीं
बालिका	5435	4.53					

तालिका संख्या–7 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 4 में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1. 64 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 4 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 5.45 प्रतिशत बालक तथा 6.24 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 4 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 07: पुनरावृत्ति दर– कक्षा–4

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का :	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4552	5.45	5.87	94.13	0.48	1.64	सार्थक नही
बालिका	5077	6.24					

तालिका संख्या–8 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 5 में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1. 59 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 4.04 प्रतिशत बालक तथा 4.74 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 08: पुनरावृत्ति दर– कक्षा–5

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का :	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4209	4.04	4.41	95.59	0.44	1.59	सार्थक नही
बालिका	4643	4.74					

परिणाम – जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

1. कक्षा 1 में 4.85 : बालकों ने तथा 5.61 : बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया।
2. कक्षा 2 में 3.97 : बालकों ने तथा 3.89 : बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया।
3. कक्षा 3 में 5.27 : बालकों ने तथा 4.53 : बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया।
4. कक्षा 4 में 5.45 : बालकों ने तथा 6.24 : बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया।
5. कक्षा 5 में 4.04 : बालकों ने तथा 4.74 : बालिकाओं ने कक्षा पुनरावृत्ति किया।

अतः कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष – उपर्युक्त शोध अध्ययन के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था परन्तु यह अन्तर सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक बालिकायें लगभग समान रूप से कक्षा पुनरावृत्ति की समस्या से प्रभावित थे। अतः परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

अध्ययन के निहितार्थ – प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर पुनरावृत्ति दर के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव समीचीन प्रतीत होते है। ये निष्कर्ष एंव सुझाव शिक्षा के योजनाकारों, प्रशासकों तथा शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रसार तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

1. प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पुनरावृत्ति के कारणों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के लिए गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक वातावरण सृजित किया जा सकता है जिससे बच्चे उच्च शैक्षिक उपलिब्ध स्तर को प्राप्त कर सकते है।
2 बुनियादी शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
3 प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पुनरावृत्ति की समस्या के समाधान के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षण को व्यावहारिक, आसान व रूचिकर बनाने का प्रयास अपेक्षित है।
4 जो विद्यार्थी अनुतीर्ण हो रहे है अथवा निम्न शैक्षिक उपलिब्ध के कारण अवसादग्रस्त है उनके मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए।
5 प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए इस हेतु माता–पिता तथा अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए निरन्तर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।
6. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाकलापो में बच्चो की समुचित भागेदारी सुनिश्चित कराकर तथा शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग किया जाये, जिससे बच्चों में शिक्षण के प्रति रूचि तथा आत्मविश्वास में वृद्धि किया जा सके।
7. प्राथमिक शिक्षा हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में समस्त शैक्षिक सुविधायें विकसित कर नामांकन और ठहराव में वृद्धि किया जा सकता है।

स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पुनरावृत्ति होने से अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें व्याप्त होती हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पुनरावृत्ति के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का सार्थक प्रयास नहीं किया जायेगा तब तक राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रयास किया जाना समीचीन होगा क्योंकि राष्ट्र का भविष्य इन्हीं बालक व बालिकाओं के कन्धों पर है। जब तक सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उनका सर्वांगींण विकास नहीं किया जाता तब तक राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की कल्पना करना व्यर्थ ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रैकवार, रामगोपाल प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता स्तर की समस्या, प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल, 2000, 12–16।
2. गुप्ता, दलजीत ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नॉनफारमल एजुकेशन प्रोग्राम'' (ऐज ग्रुप 9-14) रन बाई डिफ्रेन्ट एजेन्सीज इन द स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश पी0एच0डी0 एजुकेशन, भोपाल विश्वविद्यालय, 1983।
3. मिश्र, जयनारायण अनुदेशकों की दृष्टि में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समस्यायें, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाय, 1998, 15-23।
4. तोमर, लज्जाराम भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन केशवकुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली, संस्करण, 1991।
5. गैरेट, एच. ई मनोविज्ञान एंव शिक्षा में सांख्यिकी। दशम संस्करण। बी एफ एण्ड सन्स बॉम्ब, 1981।
6. नयाल, जी. एस विद्यालय से पलायन के कारण भारतीय आधुनिक शिक्षा। वर्ष द्वितीय अंक चतुर्थ। एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली, 1985।

7. उतरांचल दूरस्थ शिक्षा कार्यकम विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एंव विश्लेषण। उतरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद डी. पी. ई. पी. – 3 देहरादून, 2006।
8. पाठक, पी. डी एंव त्यागी, जी. एस. डी. भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित। आगरा पब्लिकेशन आगरा, 2008।
9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय सर्व शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए एक अभियान। नई दिल्लीः प्रारम्भिक शिक्षा एंव साक्षरता विभाग, 2002।